By:- Sunita Kumari
Dept. of History
T.N.C Madhubani

B.A. History
Deg-II
Paper-IV
Date:-03.07.2020

पश्चिम एशिया में तेल कूटनीति :—

(Write in brief about the oil deplomacy in West Asia.)

विश्व भर में उत्पन्न होने वाले तेल का लगभग 20 प्रतिशत तेल अकेले पश्चिमी एशिया से प्राप्त किया जाता है। रूस, चीन तथा साम्यवादी गुट के अन्य यूरोपीय देश अपनी आवश्यकतानुसार तेल उत्पन्न कर लेते हैं। फ्रांस, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, इटली आदि पश्चिमी यूरोपीय देशों में तेल का उत्पादन अपनी आवश्यकता से कम है। इस कारण उन्हें अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिये तेल का आयात करना पड़ता है। पश्चिमी एशिया से ये इसे सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं। इसका कारण यह था कि भौगोलिक दृष्टि से पश्चिमी एशिया के देश यूरोप के सन्निकट हैं। संयुक्त राज्य अमरीका, कनाड़ा, तथा मैक्सिको के देश भी अपनी आवश्यकता के लिये इसी क्षेत्र से तेल मंगाते हैं। इसी प्रकार भारत-लंका इण्डोनेशिया तथा पाकिस्तान आदि देश भी अपनी आवश्यकता से कम तेल उत्पादित करने के कारण यहाँ से तेल आयातित करते हैं। इसी कारण ब्रिटेन, फ्रांस आदि पश्चिमी यूरोप के देशों का ध्यान पश्चिमी एशिया के प्रदेशों की ओर आकृष्ट हुआ। उन्होंने इस क्षेत्र के विभिन्न प्रदेशों पर प्रभाव स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने इन देशों की राजनीति में प्रत्यक्ष रुचि लेने आरम्भ कर दी तथा तेल प्राप्त करने के लिये इन देशों में अपने प्रभाव क्षेत्रों की स्थापना की। प्रथम विश्व युद्ध के समय तक भी पश्चिमी यूरोपीय देश पश्चिमी एशिया के इस क्षेत्र में परस्पर संघर्षरत थे।

2. तेल की प्रगति (To obtain oil) :→ यद्यपि यूरोप के निवासियों को इस क्षेत्र में तेल प्राप्ति के संबंध में उन्नीसवीं शताब्दी में ही ज्ञात हो गया था, पर वास्तविक तेल निकालने का कार्य सन 1908 में शुरू किया गया। सबसे पहले इराक के मस्जिदे-सुलेमान में तेलकूप खोदे गये तथा ईरान में आबादान में तेल शोधक कार्य करने लिये प्रथम रिफाइनरी की स्थापना की गई। प्रथम महायुद्ध समाप्त होने पर पश्चिमी एशिया में अन अनेक स्थानों पर तेल का अस्तित्व ज्ञात हुआ तथा अल्पका-ल में ही तेल की दृष्टि से इस क्षेत्र का महत्व अत्याधिक बढ़ गया।

3. ईरान (Iran) :→ सन 1909 ई० में ईरान में तेल खोजने व निकालने के लिये ईरानियन आयल कम्पनी स्थापित की गई। इस समय ईरान में मुजफ्फर उद्दीन शाह शासक था जो अत्यन्त विलासप्रिय तथा फिजुलखर्ची था। उसे धन की सदैव आवश्यकता रहती थी। शाह, ब्रिटेन, फ्रांस आदि देशों से भारी ऋण लेता रहता था। अतएव जब इस तेल संस्थान की स्थापना हुई। तब उसने 60 वर्ष के लिये इसको तेल निकालने के अधिकार दे दिये। इसके लिये केवल यह शर्त रखी की तेल उद्योग से जो लाभ कम्पनी को प्राप्त होगा। उसका 16 प्रतिशत रायल्टी के रूप में ईरानी सरकार को दिया जायेगा। कम्पनी को तेल निकालने के कार्य में असाधारण सफलता प्राप्त हुई।

The End

Sunita Kumari
Dept. of Hist